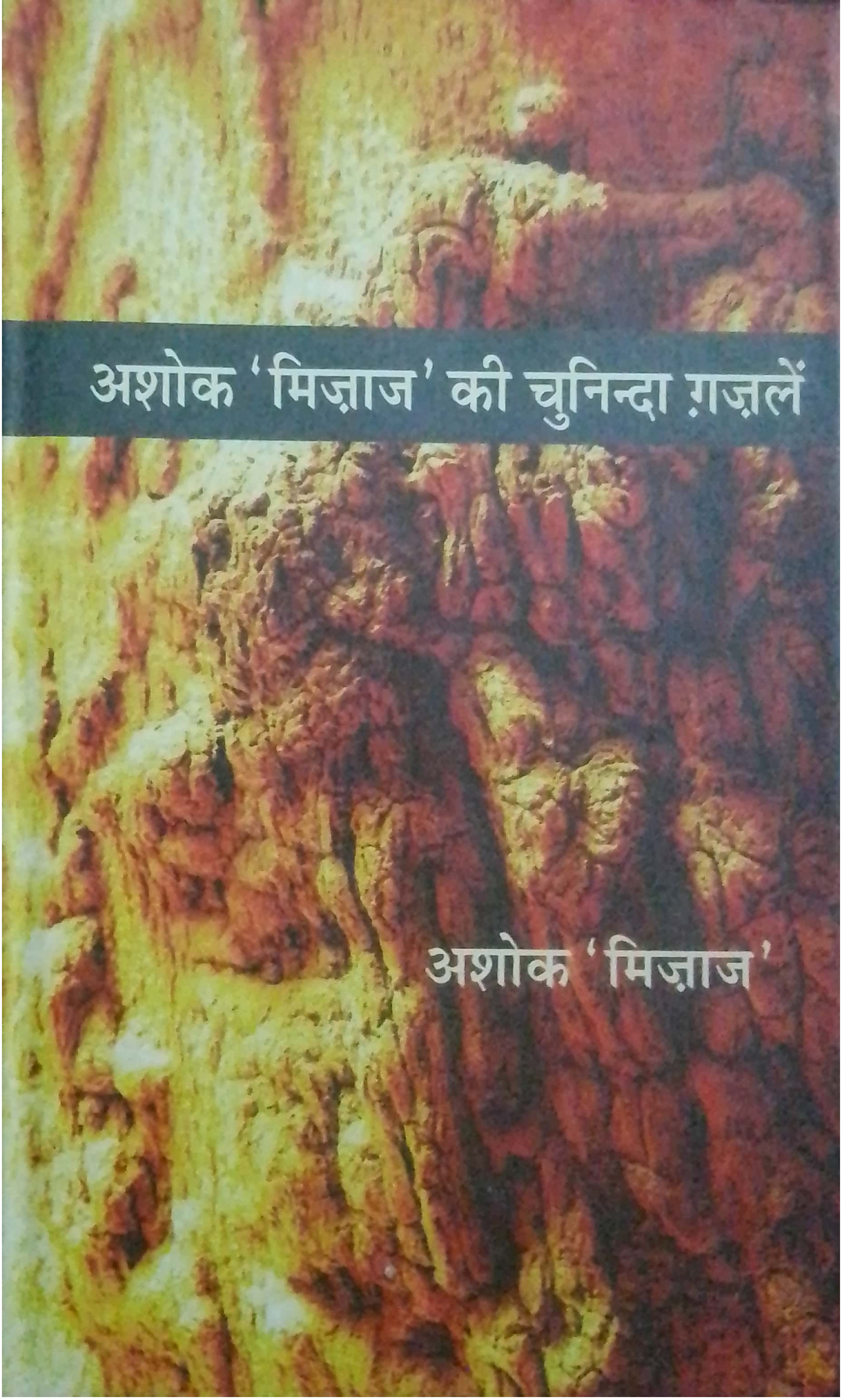

अशोक 'मिज़ाज' की चुनिन्दा ग़ज़लें

अशोक 'मिज़ाज'

Scanned with OKEN Scanner

लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक 1339

ISBN 978-93-87919-08-02

अशोक मिज़ाज की चुनिन्दा ग़ज़लें
अशोक मिज़ाज

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110 003

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर ऐंड प्रिंटर्स, दिल्ली

आवरण-चित्र : लीलाधर मंडलोई
आवरण : चन्द्रकान्त शर्मा

© श्री अशोक मिज़ाज

ASHOK MIZAJ KI CHUNINDA GHAZALEN
Ashok Mizaj

Published by
Bharatiya Jnanpith
18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110 003
Ph. : 011-24698417, 24626467; 23241619 (DaryagUnj)
Mob. : 9350536020; e-mail : bjnanpith@gmail.com
sales@jnanpith.net; website : www.jnanpith.net

First Editior. : 2018
Price : Rs. 220

अनुक्रम

हैं दुनिया में जितने सुख़नवर	19
खुले ज़माने से घूँघट की आस छोड़ो भी	20
आपके जैसा तो शृंगार नहीं कर सकते	21
शराफ़त हम से कहती है शराफ़त से जिया जाए	22
इक ग़ज़ल हर रात को दिल में उभरती है	23
पराये पेड़ को तुम साइबान मत समझा	24
इक्कीसवीं सदी की अदा कह सकें जिसे	25
हवस परस्त की शैतानियाँ ये क्या जानें?	26
वो इस भीड़ की ज़ात से दूर क्यूँ है?	27
फैली हुई है आज बग़ावत कहाँ कहाँ	28
वो पाक जैसा न हो और न चीन जैसा हो	29
मोहब्बत, अम्न, खुशहाली ये हर इन्सान की चाहत	30
हमारे अम्नो-अमाँ को झिंझोड़ देता है	31
मस्अला नाज़ुक बहुत है इस तरह पेश आओ मत	32
लड़ाइयों से निपटना बहुत ज़रूरी है	33
हर इक फ़साद पे मुल्ज़िम हमें बनाने का	34
कहीं उमीद का दीपक मिले तो क्या कहना	35
यहाँ ऐसा भी होता है कि ताक़त हार जाती है	36
सड़कों पे हादसों से ख़बरदार नहीं है	37
मैं अशोक हूँ, मैं मिज़ाज भी	38
मोहब्बतों में भी दुश्वारियाँ निकलती हैं	39
हर इक सवाल को पढ़ना है, ध्यान देना है	40
आना भी नहीं है कहीं जाना भी नहीं है	41

Scanned with OKEN Scanner

जुल्म के सामने तलवार हूँ ख़ंजर हूँ मैं 42
ज्यों क़फ़स में फड़फड़ाते पक्षियों की ज़िंदगी 43
अब ग़ज़ल का बदल रहा है मिज़ाज 44
मुझे बचपन से कोई आइना अच्छा नहीं लगता 45
रिश्ते जताने लोग मेरे घर भी आएंगे 46
अपने चेहरे को खुश दिखाना भी 47
प्यार की है, हवस की बात नहीं 48
क्या ये अंधेर नहीं देर ज़ियादा होना 49
ऐसा लहू तो आज से पहले बहा न था 50
क्या ख़बर थी रंजिशें ही दरमियाँ रह जाएंगी 51
उसने भी दर्द को पत्थर तले पाला होगा 52
अदब नवाज़1 हैं दुश्मन तो हम अदब के नहीं 53
तड़प की, आह, की आँसू की अब शिकायत क्या? 54
बस इतनी बात पर मग़रूर हूँ 55
तूफ़ान सा उट्ठा है समन्दर की तरफ़ से 56
ऐसा लगता है कि ये उम्र पहन आया है 57
होठों पे फ़क़ीरों के दुआ भी नहीं आती 58
मत डरो बिन्दास चल दो 59
झूठ में रंगते-रूख़ंसार बदल जाती है 60
किसी सवाल का तुमसे जवाब माँगा है 61
बदल रहे हैं यहाँ सब रिवाज क्या होगा? 62
मुझ पर इनायतें हैं कई साहिबान की 63
कितनी सच्चाई किस ख़बर में है 64
मैं तो ग़ज़ल के साथ बहुत दूर तक गया 65
उदास उदास फ़ज़ा खुशतरीन हो जाए 66
हर चीज़ तौलते हैं वो बाज़ार की तरह 67
कोई ग़ालिब सा सुख़नवर1 नहीं आने वाला 68
अपने ही कारोबार से फ़ुर्सत नहीं मुझे 69
ये चिट्ठियों के ज़माने से बहुत अच्छा है 90
पुराने दर्द अगर दिल दुखाने लग जाते 71
थकन का नाम न लो दोस्तो उड़ानों में 72
ये मत समझो कि हम मुरझा रहे हैं 73

Scanned with OKEN Scanner

रोकती हैं रास्ता जब लाल पीली बत्तियाँ 74
शराब ऐसी पिलाओ कि होश खो जाए 75
ज़रा सा नाम पा जाएं उसे मंज़िल समझते हैं 76
वो जिसके सामने दुनिया की हर इक चीज़ सस्ती है 77
इस ज़माने में मोहब्बत का भरम मत रखना 78
काग़ज बचे, ख़याल बचे, और क़लम बच 79
जो लोग डूब जाने के डर से ही डर गये 80
मैं तुझे अपना ख़ुदा मान लूँ इतना कर दे 91
अपनी शेख़ी बघारने वाले 82
क़त्ल में रेप का रंग आमेज़ है 83
मैं ग़ज़ल हूँ मैं कोई आज का अख़बार नहीं, 84
एक दरिया की रवानी की तरह 85
कोई दवा न कोई दुआ काम आए है 86
इश्क के खेल में आसानियाँ नहीं आतीं 87
ये और बात हैं मुझे सदमा बहुत रहा 88
दुखते हुए दिल को बस, अब ऐक ही राहत है 89
ज़िंदगी ने आज ऐसा दिन भी दिखलाया कि बस 90
मोहब्बतों में वो गहराइयाँ निकलती हैं 91
घुटते रहे हैं रोज़ शराफ़त लिये फिरे 92
हर वक़्त युँ ही शेर सुनाये नहीं जाते 93
ये नयी बात मेरे मन में कहाँ से आयी 94
कहना तो चाहता हूँ मगर हौसला नहीं 95
अय ग़ज़ल तू ही तो है उम्र का हासिल मेरा 96
नज़रों के सामने का मगर ढूँढते रहे 97
दरिया मेरे गुनाह का भरपूर हो गया 98
मेरी दीवानगी मेरी ये वहशत कम न हो जाए 99
मेरी हस्ती का मिट जाना तुम्हें शायद पसन्द आए 100
अपना नहीं है कोई तुझे किसकी आस है 101
समन्दरों की तहों में उतर न पाओगे 102
मोहब्बतों में किसी से न कुछ गिला रखना 103
ज़माने भर की नज़र से छुपा के लिखता हूँ 104
रोने धोने से गुज़ारा नहीं होने वाला 105

Scanned with OKEN Scanner

नज़र से दूर है लेकिन फ़ज़ा में शामिल है 106
भूलना भी चाहा था, कोशिशें भी कीं लेकिन, आज तक नहीं भूले 107
वो मेरी दुआ कोई और थी, ये तेरी अता कोई और है 108
मैं समन्दरों का मिज़ाज हूँ, अभी उस नदी को पता नहीं 109
रात दिन जागना भागना भूलकर 110
ग़ज़ल में दर्द के एहसास को जगाये बग़ैर 111
फिर अँधेरों में फैलीं चमकती हुई 112
अब दिल को नयी आस बँधाने नहीं आते 113
उससे बढ़कर भी कोई शेर भला होता है 114
ग़ज़ल के शेर दूँ तो चौंक जाओगे 115
एक शाइर है मेरे सीने में, रात भर चुपके चुपके रोता है 116
हमारा दर्द कोई हमसे पूछता भी नहीं 117
ख़त की सूरत में मिला था जो वो पहला काग़ज़ 118
मोहब्बत की वो शिद्दत आज भी मेहसूस होती है 119

अशोक सिंह ठाकुर उर्फ अशोक 'मिज़ाज'

जन्म स्थान एवं तिथि : सागर (म.प्र.), 23 जनवरी 1957,

शिक्षा : एम.एससी. (रसायन शास्त्र)

प्रकाशित पुस्तकें : समन्दरों का मिज़ाज (उर्दू)—शाहिद पब्लिकेशन, भोपाल, समंदरों का मिज़ाज (देवनागरी)—शाहिद पब्लिकेशन, भोपाल, सिग्नेचर—राम कृष्ण प्रकाशन विदिशा, ग़ज़लनामा (उर्दू)—म. प्र. उर्दू अकादमी द्वारा वित्तीय सहायता से, ग़ज़ल 2000—शेरों का संकलन, वाणी प्रकाशन दिल्ली (सहसम्पादन), आवाज़—वाणी प्रकाशन दिल्ली, किसी किसी पे ग़ज़ल मेहरबान होती है, वाणी प्रकाशन दिल्ली, मैं अशोक हूँ, मैं मिज़ाज भी (उर्दू)—शेरी अकादमी, भोपाल

पुरस्कार एवं सम्मान : मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी भोपाल द्वारा शिफ़ा ग्वालियरी पुरस्कार, निश्तर ख़ानकाही ग़ज़ल स्मृति अवार्ड बिजनौर (उ.प्र.), नई ग़ज़ल सम्मान, शिवपुरी, मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सागर, पन्ना, उमरिया इकाई द्वारा सम्मान, साहित्य सृजन सम्मान, साहित्य सृजन साहित्यिक संस्था जबलपुर द्वारा।

Rs. 220

भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली – 110 003

संस्थापक : स्व. साहू शान्तिप्रसाद जैन, स्व. श्रीमती रमा जैन